निस्केयर
NISCAIR

विज्ञान प्रगति

अक्तूबर 2016

सम्पादक
डॉ. बालकराम

प्रोडक्शन अधिकारी
पंकज गुप्ता
एस. पी. सिंह

कला अधिकारी
नीरू विजन

कम्पोज़िंग
मीरा देवी

वरिष्ठ बिक्री एवं वितरण अधिकारी
लोकेश कुमार चोपड़ा

आवरण
नीरू विजन

मच्छरों का कहर

जैसे ही बरसात का मौसम आया बहुत प्रसन्नता हुई कि अब गर्मी से निजात मिलेगी, परन्तु ये क्या! गर्मी से निजात तो मिली लेकिन असली बरसात हुई मच्छर जनित बीमारियों की। आप और आपका परिवार स्वस्थ रहकर बरसात के मौसम का आनंद लेना चाहते हैं लेकिन मच्छरों को इसकी क्या चिंता, उन्हें तो बस अपना काम करना है। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए जहां समुचित खान-पान, व्यायाम और विश्राम आवश्यक है, उतना ही आवश्यक है बीमारियों के प्रकोप से बचना। बरसात में अन्य ऋतुओं की तुलना में जीवाणुओं और वायरस का प्रकोप बढ़ जाता है। इन दिनों डेंगू, चिकनगुनिया, वायरल, मलेरिया और फ्लू जैसी बीमारियों ने हाहाकार मचा रखा है। मरीजों की संख्या दिनों-दिन बढ़ती जा रही है। हालात ऐसे हैं कि अस्पताल में मरीजों की लम्बी कतारें दिखाई दे रही हैं। आपको बता दें कि सुरक्षा की जिम्मेदारी संभालने वाले पुलिसकर्मी भी अब इन बीमारियों का दंश झेल रहे हैं। पूरे विश्व में अपने बढ़ते प्रकोप के कारण ये बीमारियां वैश्विक चिंता का कारण बनी हुई हैं। भारत में विशेषतः उत्तर भारत में इनका प्रकोप सर्वाधिक है। हालांकि ये रोग इतने खतरनाक नहीं है लेकिन लापरवाही बरतने से किसी भी रोग की स्थिति बद से बदतर हो जाती है।

डेंगू व चिकनगुनिया का संक्रमण मच्छरों के काटने से फैलता है। ये दोनों रोग विषाणु जनित हैं। इन रोगों को फैलाने वाले मच्छर दिन में हमला करते हैं। ये स्वच्छ पानी में पैदा होते हैं। डेंगू और चिकनगुनिया दोनों ही वायरल रोग हैं। इनके लक्षण भी लगभग समान होते हैं। चिकनगुनिया के रोगियों में डेंगू के समान तेज बुखार, जोड़ों में दर्द, मांसपेशियों में पीड़ा, सिरदर्द और जोड़ों में सूजन आदि समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। इस कारण रोगी के शरीर पर लाल निशान पड़ सकते हैं किन्तु चिकनगुनिया में रक्तस्राव का जोखिम नहीं होता, जैसा कि डेंगू में प्लेटलेट्स की संख्या घटने के कारण उत्पन्न हो जाता है। डेंगू के मामलों की तुलना में इसके रोगियों में जोड़ों का दर्द लम्बे समय तक बना रहता है, विशेषकर बुजुर्गों में।

केवल भारत में ही प्रतिवर्ष इन बीमारियों के लाखों मामले सामने आते रहे हैं। घनी आबादी वाले क्षेत्रों में तो ये समस्याएं आम हैं। मच्छर पानी के स्रोतों में ही पैदा होते हैं। अतः अपने घर के आस-पास पानी जमा न होने दें तथा मच्छर-नाशक दवाई का छिड़काव कराएं। यदि आपके क्षेत्र में मच्छरों की समस्या है तो अपने स्थानीय स्वास्थ्य केन्द्र, नगरपालिका या पंचायत केन्द्र में इसकी सूचना अवश्य दें। यदि आपको लगे कि कोई व्यक्ति बुखार से पीड़ित है तो उसे शीघ्रातिशीघ्र स्थानीय स्वास्थ्य केन्द्र में ले जाएं। रोग की आशंका होते ही चिकित्सीय परामर्श द्वारा ही दवाई लें। हल्का, ताजा, पौष्टिक, गरम व सुपाच्य भोजन करें। आयुर्वेद में इन रोगों के उपचार के लिए गिलोय को रामबाण औषधि माना गया है। रोगी को अधिक मात्रा में तरल पदार्थ जैसे-नारियल पानी, शहद, फलों का रस आदि का सेवन करना चाहिए। यूनानी पद्धति के अनुसार नीम आदि मच्छर भगाने वाली वस्तुओं का प्रयोग करें। इसके अलावा होम्योपैथी द्वारा इलाज भी काफी प्रभावी है।

इन बीमारियों पर ध्यान न दिये जाने पर इसके भयावह परिणाम सामने आ सकते हैं। हालांकि ये बीमारियां काफी हद तक जानलेवा तो नहीं हैं पर ऐसी समस्या पैदा ही क्यों की जाए। अपवाहों से बचें, स्वच्छता पर विशेष ध्यान दें, मच्छरदानी का प्रयोग करें, शरीर को ढककर रखें तथा सावधानी ही इन बीमारियों का सबसे अच्छा इलाज है। ऐसा करने से इन बीमारियों को महामारी का रूप धारण करने से पहले ही रोका जा सकेगा।

बालकराम

मूल्य

एक अंक	:	30.00 रुपये
एक वर्ष	:	300.00 रुपये
दो वर्ष	:	570.00 रुपये
तीन वर्ष	:	810.00 रुपये

विदेशी वार्षिक सदस्यता : 65$
शिकायत : 011-25841647
ई-मेल : lkc@niscair.res.in

सम्पादकीय : 011-25841769, 011-25846301, 04-07/370
प्रोडक्शन : 011-25847353, 25846301, 04-07/217, 337
विज्ञापन : 011-25843359
बिक्री : 011-25841647, 25846301, 04-07/286, 289
फैक्स : 011-25847062
ई-मेल : vp@niscair.res.in
वेब साइट : http://www.niscair.res.in

© राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान
लेखकों के कथनों ओर मतों के लिये सी.एस.आई.आर. -राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान, डॉ. के. एस. कृष्णन् मार्ग, नई दिल्ली - 110 012 उत्तरदायी नहीं है।
पत्रिका से संबंधित सभी विवाद दिल्ली न्यायालय द्वारा ही निपटाये जायेंगे।